आत्म कथन

आज से 50 वर्ष पूर्व का मेरा यह फोटो दर्शाता है कि बचपन से ही मेरा रूझान धर्म के प्रति रहा है। रामायण, महाभारत, गीता, वेद–पुराण, उपनिषदों और अनेक धर्मों के ग्रंथों को पढ़कर, मनन करता रहा। शिक्षा के क्षेत्र में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से एम. काम. परीक्षा–1969 में सिल्वर मेडल प्राप्त किया था। युवावस्था में ही ऐसा लगा कि मुझे संसार त्याग कर, साधु बनकर भगवान की प्राप्ति में लग जाना चाहिए, परन्तु उस समय संत–महात्माओं ने मुझे सद्‌गृहस्थ बनने की प्रेरणा दी और बताया कि 65 वर्ष की आयु में अपने आप मेरे जीवन की दिशा बदल जाएगी। तब अपने गृहस्थ जीवन के अनुभवों से परिपक्वता पाकर अपने तन–मन–धन से समाज की सेवा कर सकोगे।

जीवन–यापन के लिए मैंने यूको बैंक के प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में सन् 1971 में अपनी सेवाएं देना शुरू किया। फिर इन्स्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स, लन्दन की बैंकिंग की परीक्षा में विश्व में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। कालक्रम में, यूको बैंक स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, कोलकाता के प्राचार्य के पद पर पहुँच कर बैंकर्स को पढ़ाया। 6 पुस्तकें बैंकर्स के लिए और 1 पुस्तक डॉक्टरों के लिए भी लिखकर प्रकाशित की, जिनके द्वारा शिक्षा का बहुत प्रचार प्रसार हुआ।

संत–महात्माओं के लिए किसी आश्रम को बनाने की जगह, मैंने रूग्ण मानवता की सेवा करने हेतु, मेरी धर्मपत्नी डॉ. मीरा पाटोदिया के साथ सन् 1978 में मीरा नर्सिंग होम की स्थापना की। फिर सन् 1990 में शिव मार्ग, बनीपार्क, जयपुर में एक आधुनिक भवन बनाकर उसमें मीरा अस्पताल का शुभारंभ किया। मेरे सुपुत्र

डॉ. अमित पाटोदिया ने फरवरी 2005 में इसी भवन में मीरा डेन्टल हॉस्पिटल का शुभारंभ किया। मेरी धर्मपुत्री याने सौ. बहू–डॉ. अंशु पाटोदिया, एम.एस. (गायनी) भी मीरा अस्पताल में अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं।

आधुनिक घोर बीमारी– कैंसर के मरीजों का उचित ईलाज करने हेतु मेरे छोटे सुपुत्र डॉ. भारत पाटोदिया ने एम.डी. मेडिसिन करने के पश्चात डी.एन.बी. मेडिकल ऑन्कोलॉजी करके, कैंसर रोग विशेषज्ञ बनकर, अमेरिकन कैन्सर इन्स्टीट्यूट के सिटीजन्स हॉस्पिटल, हैदराबाद में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उसकी धर्मपत्नी– डॉ. शालिनी पाटोदिया, चर्म एवं रतिरोग विशेषज्ञ भी अपनी सेवाएं सिटीजन्स हॉस्पिटल, हैदराबाद में ही दे रही हैं।

अपने गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों को निभाकर अब मैं नई पीढ़ी को निशुःल्क नैतिक शिक्षा दे रहा हूँ। इसके लिए स्कूलों और कालेजों में जाकर वैज्ञानिक तरीके से छात्रों के अन्तर्मन में नैतिक शिक्षा के बीज बो रहा हूँ।

क्रोध पर विजय कैसे करें? क्रोध को अपनी पॉजिटिव उर्जा कैसे बनाए? इस विषय पर सेमीनार देता हूँ। इसके साथ ही, एक सामाजिक अभियान भी चला रहा हूँ कि अन्न देवता है। अन्न को जूठन में छोड़कर इसका अपमान नहीं करें।

समाज में बिखरते हुए रिश्तों को जोड़ने का कार्य भी कर रहा हूँ। मैरिज का अर्थ समझाकर युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन दे रहा हूँ।